पंजाब केसरी
MON,31 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 4

'बदलते वैश्विक परिदृश्य की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण में बदलाव आवश्यकः प्रो. आर.सी. कुहाड़'

महेंद्रगढ़, 30 मई (मोहन, परमजीत): विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय तकनीकी शैक्षणिक परिषद महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में शैक्षणिक बदलाव के लिए लगातार प्रयासरत है, उसी प्रयास का यह परिणाम है कि दोनों परिषदों ने यह महसूस किया कि वैश्विक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है और बदलते वैश्विक परिदृश्य की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण में भी बदलाव आवश्यक हो गया है। जैसा कि अभी पिछले लगभग एक वर्ष से विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और सभी शैक्षणिक संस्थान कोरोना (कोविड-19) महामारी के कारण पारम्परिक प्रकार से कक्षाएं चला पाने में अपने को असमर्थ पा रहे हैं और वह आभासी माध्यमों से अपने विद्यार्थियों को जितना संभव हो पा रहा हैं, उन्हें शिक्षित और प्रशिक्षित कर रहे हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह निर्धारित किया गया है कि आने वाले समय में महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थान अपने यहां शैक्षणिक गतिविधियों को 40 प्रतिशत के लगभग आभासी माध्यम से पूरी करेंगे और लगभग 60 प्रतिशत भाग को पारंपरिक तरीके से पढ़ाते रहेंगे। उपर्युक्त तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने सभी शैक्षणिक संस्थानों को दिशा-निर्देश जारी किए हैं जो सभी को जानने चाहिए। यह कहना है हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ का। उन्होंने स्पष्ट किया कि

इस प्रकार के शिक्षण प्रशिक्षण को ब्लेंडेड लर्निंग कहा जाता है।

प्रो. कुहाड़ ने कहा कि ब्लेंडेड लर्निंग डिजिटल शिक्षण उपकरणों को संयोजित करने के शैक्षिक अभ्यास को दिया गया शब्द है। यह एक निर्देशात्मक पद्धति है, इसमें शिक्षण और सीखने के दृष्टिकोण हेतु निर्देश देने के लिए कम्प्यूटर की मध्यस्थता से गतिविधियों के साथ आमने-सामने कक्षा विधियों को जोड़ता है। इस शैक्षणिक दृष्टिकोण का अर्थ है आमने-सामने और आभासी गतिविधियों का मिश्रण, इसमें छात्रों के लिए एक आभासी शिक्षण वातावरण प्रदान करते हैं और दूरस्थ शिक्षार्थियों के लिए सजीव कक्षा सहयोग की अनुमति देते हैं और प्रशिक्षक और छात्रों को अपने कार्यक्रम पर बातचीत करने की अनुमति देने के लिए अन्य उपकरण और तन्त्र का उपयोग करते हैं। इस प्रकार प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं की व्यवस्था के लिए एक इष्टतम संभावना प्रदान करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

■ ऐसी नीति अपनाने का समय है जो निस्संदेह छात्र केंद्रित हो

प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने शिक्षा के परिवर्तन के माध्यम से क्या उपलब्ध किया जा सकता है, इसकी एक दुर्लभ झलक दी है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 स्पष्ट रूप से कहती है कि यह एक ऐसी नीति अपनाने का समय है जो निस्संदेह छात्र केंद्रित है, वास्तव में इस तथ्य को पहचानने का समय आ गया है कि छात्र मुख्य हितधारक है और पूरे शैक्षणिक तंत्र को उनके सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करना चाहिए। एक मिश्रित शिक्षण प्रणाली कई पहलुओं में लचीलापन प्रदान करती है। दुनिया लगातार बदल रही है और विभिन्न ज्ञान क्षेत्र भी परिवर्तन से प्रभावित हैं। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। डिजिटल सीखने के मंच के विकास का शैक्षणिक संस्थानों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है और अंततः पारंपरिक तरीकों को पीछे छोड़ने पर मजबूर कर दिया है। इसको अपनाने के कई कारण भी हैं जैसे सीखने में छात्रों की व्यस्तता में वृद्धि, बेहतर शिक्षक और छात्र संपर्क, सीखने की जिम्मेदारी में बढ़ोतरी, समय प्रबंधन और लचीलापन, छात्रों में बेहतर सीखने के परिणाम, संस्थागत प्रतिष्ठा में वृद्धि, अधिक लचीला शिक्षण और सीखने का माहौल, स्वयं और निरंतर सीखने के लिए अधिक उत्तरदायी और अनुभवात्मक सीखने के बेहतर अवसर आदि अनेक ऐसे कारण हैं जो इस पद्धति को स्वीकारोक्ति प्रदान कराते हैं।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपनी शैक्षणिक परिषद से अनुमोदित कर लिया है और नए बदलावों के अनुसार पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन के लिए कार्य योजना पर कार्य आरंभ कर दिया है। महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पढ़ाते समय शिक्षकों द्वारा प्रदत्त सजीव उदाहरण और किसी मामले के अध्ययन से वास्तविक दुनिया के संपर्क में आने से उन्हें इस वास्तविक दुनिया के लिए तैयार होने में मदद मिलेगी।

पंजाब केसरी
SUN,30 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 2

'कोरोनाकाल में जन जागरूकता के मोर्चे पर विश्वविद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्णः प्रो. कुहाड़'

हकेंवि में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत ऑनलाइन कार्यशाला का हुआ आयोजन

महेंद्रगढ़, 29 मई (मोहन, परमजीत): भारत सहित आज समूचा विश्व कोरोना महामारी से ग्रस्त है और इसके निदान के लिए प्रयासरत है। मौजूदा समय में इस महामारी के समाधान के लिए 2 माध्यम सबसे अधिक कारगर हैं पहला सावधानी और दूसरा वैक्सीन। ऐसे में विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी बनती है कि वो जहां एक ओर लोगों को इस महामारी से बचाव के लिए आवश्यक तथ्यों व सूचनाओं से अवगत करवाएं बल्कि वो वैज्ञानिक स्तर पर इस महामारी से बचने के लिए जारी प्रयासों में योगदान दें और ऐसे प्रयासों के प्रति विचार-विमर्श के स्तर पर सकारात्मक रूप से कार्य करें। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने शनिवार को आजादी का

हकेंवि में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यशाला में शामिल विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ व अन्य।

अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के डा. के.के. शर्मा व पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एस.के. मेहता ने संबोधित किया।

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस की ओर से आर.टी.-पी.सी.आर. टैस्टिंग किट व सैनिटाइजर पर केंद्रित इस कार्यशाला का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के संबंध में जानकारी दी और बताया कि इस अभियान के माध्यम से आजादी के बाद विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों का स्मरण करना और भविष्य की योजना तैयार कर प्रगति के लिए कदम बढ़ाना है। प्रो. सारिका शर्मा ने इस अवसर पर कोविड-19 पर आधारित वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गेनाइजेशन की एक वीडियो सामग्री भी प्रस्तुत की।

विश्वविद्यालय के कुलपति ने मुख्यातिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि आजादी बेशकीमती है और यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम इसका महत्व समझें और देश की आजादी में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वालों के योगदान को सदैव याद रखें। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए इस आजादी का अमृत महोत्सव के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हम संकल्पबद्ध है और हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन पूरी जिम्मेदारी से करेंगे। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालयों की भूमिका राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण है और हम लगातार अच्छे युवा इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, प्रशासनिक अधिकारी व राजनेताओं का निर्माण कर रहे हैं जोकि इस देश की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

आर.टी.-पी.सी.आर. टैस्ट और सैनिटाइजर के विषय में विशेषज्ञों ने दी जानकारी

कार्यशाला के प्रथम वक्ता डा. के.के. शर्मा ने आर.टी.-पी.सी.आर. टैस्ट की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला। डा. के.के. शर्मा ने टैस्ट के सही और गलत आने की प्रमुख वजह सैम्पल लेने की प्रक्रिया को बताया। यदि सैम्पल सही ढंग से एकत्र किया जाता है तो नतीजे 95 प्रतिशत तक सही रहते हैं। भारतीय बाजार में 70 से 80 प्रकार के टैस्टिंग किट उपलब्ध हैं और उनके कार्य करने की अपनी अलग प्रक्रिया है जोकि उनकी प्रामाणिकता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एस.के. मेहता ने अपने संबोधन में सैनिटाइजर विकसित करने पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यशाला के समन्यवक डा. विनोद कुमार ने बताया कि इस आयोजन में आयोजन सचिव डा. हरीश कुमार, डा. मनोज कुमार गुप्ता, सह आयोजन सचिव डा. राजीव एस. मेनन, को-ऑडिनेटर डा. प्रकाश कानू, डा. एजाज अंसारी, व सलाहकार प्रो. दीपक पंत, प्रो. नीलम सांगवान डा. बिजेंद्र सिंह, डा. गुंजन गोयल, डा. सुनील कुमार व डा. सुरेंद्र सिंह ने अहम भूमिका अदा की।

हकेवि में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत ऑनलाइन कार्यशाला का हुआ आयोजन

नारनौल, राजेश राज गोयल।

भारत सहित आज समूचा विश्व कोरोना महामारी से ग्रस्त है और इसके निदान के लिए प्रयासरत है। मौजूदा समय में इस महामारी के समाधान के लिए दो माध्यम सबसे अधिक कारगर है पहला सावधानी और दूसरा वैक्सीन। ऐसे में विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी बनती है कि वो जहां एक ओर लोगों को इस महामारी से बचाव के लिए आवश्यक तथ्यों व सूचनाओं से अवगत करायें बल्कि वो वैज्ञानिक स्तर पर इस महामारी से बचने के लिए जारी प्रयासों में योगदान दे और ऐसे प्रयासों के प्रति विचार-विमर्श के स्तर पर सकारात्मक रूप से कार्य करें। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के डॉ. के. के. शर्मा व पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एस. के. मेहता ने संबोधित किया।

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस की ओर से आरटी-पीसीआर टेस्टिंग किट व सेनिटाइजर पर केंद्रित इस कार्यशाला का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर

प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के संबंध में जानकारी दी और बताया कि इस अभियान के माध्यम से आजादी के बाद विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों का स्मरण करना और भविष्य की योजना तैयार कर प्रगति के लिए कदम बढ़ाना है। प्रो. सारिका शर्मा ने इस अवसर पर कोविड-19 पर आधारित वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की एक वीडियो सामग्री भी प्रस्तुत की। कार्यशाला के समन्वयक और स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस के डीन डॉ. विनोद कुमार ने मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ताओं डॉ. के.के. शर्मा व प्रो. एस.के. मेहता का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि आजादी बेशकीमती है और यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम इसका महत्व समझें और देश की आजादी में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वालों के योगदान को सदैव याद रखें। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए इस आजादी का अमृत महोत्सव के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हम संकल्पबद्ध है और हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन पूरी जिम्मेदारी से करेंगे। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालयों की भूमिका राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण है और हम लगातार अच्छे युवा इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, प्रशासनिक अधिकारी व राजनेताओं का निर्माण कर रहे हैं जोकि इस देश की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी विशेष रूप से इस बात पर जोर देती है कि हम समाज के विकास में, उसकी बेहतरी में किस तरह से योगदान दे सकते हैं। कुलपति ने कहा कि कोरोना महामारी के दौर में भी शिक्षण संस्थान निरंतर जागरूकता व शोध कार्यों के माध्यम से समाज की बेहतरी के लिए अपनी अपनी क्षमता के अनुसार कार्य कर रहे हैं जोकि सराहनीय है।

आजादी का अमृत महोत्सव अभियान • हकेंवि में ऑनलाइन कार्यशाला का हुआ आयोजन, कुलपति प्रो.आरसी कुहाड़ ने कहा-

कोरोनाकाल में जन जागरुकता में विश्वविद्यालयों की भूमिका अहम

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

भारत सहित आज समूचा विश्व कोरोना महामारी से ग्रस्त है और इसके निदान के लिए प्रयासरत है। मौजूदा समय में इस महामारी के समाधान के लिए दो माध्यम सबसे अधिक कारगर है पहला सावधानी और दूसरा वैक्सीन। ऐसे में विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी बनती है कि वो जहां एक ओर लोगों को इस महामारी से बचाव के लिए आवश्यक तथ्यों व सूचनाओं से अवगत करायें बल्कि वो वैज्ञानिक स्तर पर इस महामारी से बचने के लिए जारी प्रयासों में योगदान दे और ऐसे प्रयासों के प्रति विचार-विमर्श के स्तर पर सकारात्मक रूप से कार्य करें। यह विचार आज शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला में निकल कर आया।

आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के डॉ. केके शर्मा व पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एसके मेहता ने संबोधित किया। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस की ओर से आरटी-पीसीआर टेस्टिंग किट व सेनिटाइजर पर केंद्रित इस कार्यशाला का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के संबंध में जानकारी दी और बताया कि इस अभियान के माध्यम से आजादी के बाद विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों का स्मरण करना और भविष्य की योजना तैयार कर प्रगति के लिए कदम बढ़ाना है। प्रो. सारिका शर्मा ने इस अवसर पर कोविड-19 पर आधारित वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की एक वीडियो सामग्री भी प्रस्तुत की। कार्यशाला के समन्वयक और स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस के डीन डॉ. विनोद कुमार ने मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ताओं डॉ. केके शर्मा व प्रो. एसके मेहता का स्वागत किया।

कार्यशाला के प्रथम वक्ता डॉ. के.के. शर्मा ने आरटी-पीसीआर टेस्ट की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला। डॉ. के.के. शर्मा ने टेस्ट के सही और गलत आने की प्रमुख वजह सेम्पल लेने की प्रक्रिया को बताया। इसी तरह पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एस.के. मेहता ने अपने संबोधन में सेनिटाइजर विकसित करने पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रो. मेहता ने अपने सहयोगी हरिन्द्र पाल सिंह व राहुल के सहयोग से उपयोगी सेनिटाइजर तैयार करने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय में आयोजित इस ऑनलाइन कार्यशाला के समन्वयक डॉ. विनोद कुमार ने बताया कि इस आयोजन में आयोजन सचिव डॉ. हरीश कुमार, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता, सह आयोजन सचिव डॉ. राजीव एस. मेनन, को-ऑडिनेटर डॉ. प्रकाश कानू, डॉ. एजाज अंसारी, व सलाहकार प्रो. दीपक पंत, प्रो. नीलम सांगवान डॉ. बिजेंद्र सिंह, डॉ. गुंजन गोयल, डॉ. सुनील कुमार व डॉ. सुरेंद्र सिंह ने अहम भूमिका अदा की। डॉ. विनोद कुमार ने बताया कि इस कार्यशाला में देश के विभिन्न 23 राज्यों व केंद्रशासित प्रदेश से करीब 400 प्रतिभागियों ऑनलाइन माध्यम से शामिल हुए। कार्यशाला का सफलतम संचालन डॉ. प्रकाश कानू ने किया और धन्यावाद ज्ञापन डॉ. राजीव एस मेनन ने प्रस्तुत किया।

आजादी बेशकीमती है, इसका महत्व समझें : विश्वविद्यालय के कुलपति ने मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि आजादी बेशकीमती है और यह हमारा कर्तव्य है कि हम इसका महत्व समझें और देश की आजादी में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वालों के योगदान को सदैव याद रखें। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालयों की भूमिका राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण है और हम लगातार अच्छे युवा इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, प्रशासनिक अधिकारी व राजनेताओं का निर्माण कर रहे हैं जोकि इस देश की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

जन जागरूकता के मोर्चे पर विश्वविद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण : प्रो. आरसी कुहाड़

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत ऑनलाइन कार्यशाल आयोजन किया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक के डॉ. केके शर्मा, पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एसके मेहता मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

इस मौके पर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी. कुहाड़ ने कहा कि भारत सहित आज समूचा विश्व कोरोना महामारी से ग्रस्त है और इसके निदान के लिए प्रयासरत है। मौजूदा समय में इस महामारी के समाधान के लिए दो माध्यम सबसे अधिक कारगर है पहला सावधानी और दूसरा वैक्सीन। ऐसे में विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी बनती है कि वो जहां एक ओर लोगों को इस महामारी से बचाव के लिए आवश्यक तथ्यों व सूचनाओं से अवगत कराएं बल्कि वो वैज्ञानिक स्तर पर इस महामारी से बचने के लिए जारी प्रयासों में योगदान दें और ऐसे प्रयासों के प्रति विचार-विमर्श के स्तर पर सकारात्मक रूप से कार्य करें।

डॉ. केके शर्मा ने आरटी-पीसीआर टेस्ट की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला। उन्होंने टेस्ट के सही और गलत आने की प्रमुख वजह सैंपल लेने की प्रक्रिया को बताया। उन्होंने कहा कि यदि सेम्पल सही ढंग से एकत्र किया जाता है तो परिणाम ठीक आता है अन्यथा उसमें खामी रह जाती है। पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एसके मेहता ने अपने संबोधन में सैनिटाइजर विकसित करने पर अपने विचार व्यक्त किए।

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस की ओर से आरटी-पीसीआर टेस्टिंग किट और सैनिटाइजर पर केंद्रित इस कार्यशाला का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई। आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के संबंध में जानकारी दी और बताया कि इस अभियान के माध्यम से आजादी के बाद विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों का स्मरण करना और भविष्य की योजना तैयार कर प्रगति के लिए कदम बढ़ाना है।

पंजाब केसरी
SAT,29 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 4

'प्रशासनिक, सामाजिक सुधारों में शिक्षकों, विद्यार्थियों व विश्वविद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण : प्रो. आर.सी. कुहाड़'

■ हकेंवि में विशेष व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत वैबिनार आयोजित

महेंद्रगढ़, 28 मई (मोहन, परमजीत): शिक्षार्थी और विद्यार्थी दोनों मिलकर समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं। इतिहास साक्षी है कि विश्व में जो भी परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं वह प्राय: विश्वविद्यालयों की ही देन हैं। समाज व प्रशासन में सुधार की बात हो या भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र की बात हो, इन सब के पीछे अगर कोई अहम भूमिका निभा सकता है, तो वह विश्वविद्यालय ही हैं। विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी देश का भविष्य हैं, भावी नागरिक हैं, आने वाले समय में यही देश में समाज सुधारक के रूप में, प्रशासन में बैठे अधिकारियों के रूप में और देश को दिशा दे रहे राजनीतिज्ञों के रूप में दिखाई देंगे। ऐसे में शिक्षकों की भूमिका एक बार पुन: महत्वपूर्ण हो जाती है कि वे अपने विद्यार्थियों को आने वाली चुनौतियों से अवगत कराएं, उनका प्रबंधन करने के तरीके बताएं ताकि हमारे विद्यार्थी एक स्वच्छ प्रशासन, स्वस्थ समाज और विकसित राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। यह कहना है हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ का।

उन्होंने यह विचार विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन वैबिनार में अपने संदेश के माध्यम से व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के लोक प्रशासन विभाग के सेवानिवृत्त प्रतिष्ठित शिक्षाविद प्रो. अशोक शर्मा उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग की ओर आयोजित व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत' भारत में प्रशासनिक सुधार: अवसर व चुनौतियां' विषय पर केंद्रित इस वैबिनार में प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने संदेश के माध्यम से कहा कि प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से प्रशासन में इस प्रकार के सुनियोजित बदलाव लाए जाते हैं जिससे प्रशासनिक क्षमताओं में वृद्धि होती है तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने में सहूलियत होती है। आर्थिक व सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रशासनिक क्षेत्र को चौकस और चाक-चौबंद रहना जरूरी है। यदि ऐसा नहीं है तो अपेक्षित सुधार किया जाना आवश्यक है। प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से किसी भी विभाग या संगठन को आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित किया जा सकता है।

कोई भी सुधार, परिवर्तन रातों-रात नहीं हुआ इसके लिए सतत प्रयास आवश्यक

प्रो. कुहाड़ के अनुसार भारत में सदैव प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता रही है, इसीलिए स्वतंत्रता के बाद आज तक प्रशासनिक सुधारों के लिए कई समितियों का गठन किया गया और उन्होंने प्रशासनिक सुधारों के बारे में उठाए जाने वाले कदमों के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों को समय-समय पर अवगत भी कराया है। सरकारों ने उन्हें अपने स्तर पर लागू भी किया है लेकिन आज भी प्रशासन में कुछ सुधारों की आवश्यकता है। प्रो. कुहाड़ का मत है कि कोई भी सुधार, कोई भी परिवर्तन एक दिन में रातों-रात नहीं हुआ करता। उसके लिए सतत प्रयास आवश्यक है। भविष्य के नागरिकों को विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के स्तर पर ऐसा शिक्षण व प्रशिक्षण दिया जाए ताकि उनमें चरित्र, कौशल, समझ और राष्ट्रीय चेतना का विकास हो। जिससे वे कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कक्ष से लेकर ईटानगर तक भारत के प्रत्येक प्रांत को अपना समझ कर, अपनत्व की भावना से सभी के साथ हवा, पानी, सूरज की तरह व्यवहार कर सकें। तभी हम जिस रामराज्य की कल्पना करते हैं, जिस सतयुग की कल्पना करते हैं, उसके साकार होने में हम कुछ कदम आगे बढ़ा सकेंगे।

इसी क्रम में कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता प्रो. अशोक शर्मा ने भारत मे प्रशासनिक सुधार के इतिहास व परिचय से अवगत कराते हुए कहा कि देश में भिन्न-भिन्न समय में अनेक प्रशासनिक सुधार हुए हैं। किसी देश के विकास को पंख तभी लगते हैं जब वहां कम से कम लाल फीताशाही विद्यमान रहती है। कार्यक्रम में प्रो. शर्मा ने सभी विद्यार्थियों से प्रश्न लेते हुए उनके बड़े प्रभावी ढंग से जवाब दिए। इस आयोजन का सफलतम संचालन विभाग के सह-आचार्य डॉ. रमेश कुमार ने किया ।

सामाजिक सुधारों में शिक्षकों व विद्यार्थियों की भूमिका महत्वपूर्ण : प्रो. आरसी कुहाड़

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़: शिक्षक और विद्यार्थी दोनों मिलकर समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं। इतिहास साक्षी है कि विश्व में जो भी परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। वह प्राय: विश्वविद्यालयों की ही देन है। समाज व प्रशासन में सुधार की बात हो या भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र की बात हो, इन सब के पीछे अगर कोई अहम भूमिका निभा सकता है, तो वह विश्वविद्यालय ही है।

विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले यही विद्यार्थी देश का भविष्य है, भावी नागरिक है, आने वाले समय में यही देश में समाज सुधारक के रूप में, प्रशासन में बैठे अधिकारियों के रूप में और देश को दिशा दे रहे राजनीतिज्ञों के रूप में दिखाई देंगे। यह कहना है हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ का। उन्होंने यह विचार विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के द्वारा आयोजित आनलाइन वेबिनार में अपने संदेश के माध्यम से व्यक्त किए। इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के लोक प्रशासन विभाग के सेवा निवृत प्रतिष्ठित शिक्षाविद् प्रो. अशोक शर्मा उपस्थित रहे।

उन्होंने कहा कि प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से प्रशासन में इस प्रकार के सुनियोजित बदलाव लाए जाते हैं, जिससे प्रशासनिक क्षमताओं में वृद्धि होती है तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने में सहूलियत होती है। क्योंकि न सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रशासनिक क्षेत्र को चौकस और चाक-चौबंद रहना जरूरी है। यदि ऐसा नहीं है तो अनिवार्य सुधार किया जाना आवश्यक है।

प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से किसी भी विभाग या संगठन की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित किया जा सकता है। प्रो. कुहाड़ के अनुसार भारत में सदैव प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता रही है। इसीलिए स्वतंत्रता के बाद आज तक प्रशासनिक सुधारों के लिए कई समितियों का गठन किया गया और

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति आरसी कुहाड़ • जागरण

उन्होंने प्रशासनिक सुधारों के बारे में उठाए जाने वाले कदमों के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों को समय-समय पर अवगत भी कराया है। हमारा मानना है कि यदि हम भारतीय शासन, प्रशासन और दूसरे किन्हीं भी क्षेत्रों में सुधार चाहते हैं तो उसके प्रयास ऊपर से नहीं नीचे से शुरू होने चाहिए। नीचे से सुधार होने का तात्पर्य है कि हम राष्ट्र के भविष्य को विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के स्तर पर ऐसा तैयार करें कि वे राष्ट्र की सेवा के लिए बड़े से बड़ा त्याग और बलिदान करने में पीछे न हटें, झिझकें नहीं। कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता प्रो. अशोक शर्मा ने भारत में प्रशासनिक सुधार के इतिहास व परिदृश्य से अवगत कराते हुए कहा कि देश में भिन्न भिन्न समय में अनेक प्रशासनिक सुधार हुए हैं। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की विधि पीठ के अधिष्ठाता प्रो. राजेश कुमार मलिक ने प्रशासनिक सुधारों से जुड़े वैधानिक प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय में आयोजित इस वेबिनार का आयोजन राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. रणबीर दलाल व डा. रमेश कुमार के प्रयासों से किया गया।

उन्होंने बताया कि इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित रहे। इस आयोजन के सफलतम संचालन विभाग के सह-आचार्य डा. रमेश कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक आचार्य डा. श्वेता सोहल ने प्रस्तुत किया।

वेबिनार • हकेंवि के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सेमिनार में प्रो. आर. सी. कुहाड़ बोले-

सामाजिक सुधारों में शिक्षकों, विद्यार्थियों की भूमिका महत्वपूर्ण

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

विद्यार्थी देश का भविष्य हैं, भावी नागरिक हैं, आने वाले समय में यही देश में समाज सुधारक के रूप में, प्रशासन में बैठे अधिकारियों के रूप में और देश को दिशा दे रहे राजनीतिज्ञों के रूप में दिखाई देंगे।

ऐसे में शिक्षकों की भूमिका एक बार पुनः महत्वपूर्ण हो जाती है कि वे अपने विद्यार्थियों को आने वाली चुनौतियों से अवगत कराएं। यह कहना है हकेंवि के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ का। उन्होंने यह विचार विवि के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन वेबिनार में संदेश के माध्यम से व्यक्त किए।

विशेषज्ञ वक्ता के रूप में राजस्थान विवि, जयपुर के लोक प्रशासन विभाग के सेवा निवृत प्रतिष्ठित शिक्षाविद् प्रो. अशोक शर्मा उपस्थित रहे। विवि में राजनीति विज्ञान विभाग की ओर आयोजित व्याख्यान श्रंखला के अंतर्गत भारत में प्रशासनिक सुधार अवसर व चुनौतियां विषय पर केंद्रित वेबिनार में प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि प्रशासनिक सुधारों से प्रशासन में इस प्रकार के सुनियोजित बदलाव लाए जाते हैं, जिससे प्रशासनिक क्षमताओं में वृद्धि होती है तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने में सहूलियत होती है।

इसी क्रम में प्रो. अशोक शर्मा ने कहा देश में भिन्न-भिन्न समय में अनेक प्रशासनिक सुधार हुए है। लेकिन आज भी बहुत से सुधारों की आवश्यकता है। प्रो. राजेश कुमार मलिक ने वेबिनार को संबोधित करते हुए प्रशासनिक सुधारों से जुड़े वैधानिक प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प्रो. राजबीर दलाल व डॉ. रमेश कुमार के प्रयासों से किया गया। प्रो. राजबीर दलाल ने बताया व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत यह दूसरा आयोजन है। वेबिनार में विवि के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित रहे।

उत्कृष्टता हेतु छात्रों को जीवन कौशलों को सीखने के लिए प्रेरित करना समय की मांग -प्रो. आर. सी. कुहाड़

नारनौल, राजेश राज गोयल,

हम सभी भारत के स्वर्णिम अतीत से भलीभांति अवगत है। इसका वर्णन हम सब बार-बार करते है कि हमारा राष्ट्र भारत कभी विश्व गुरु था। उस विश्व गुरु बनने के पीछे हमारे यहाँ का ज्ञान, विज्ञान, कला, कौशल, तकनीकी, चरित्र चिन्तन, व्यक्तित्व व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की क्रांति और प्रगति ही उसके लिए जिम्मेदार थी। हमारे यहां के प्राचीन गौरवमयी विश्वविद्यालय नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि शिक्षा, ज्ञान, कला और कौशल के बड़े केंद्र थे, जहां पढ़ने और पढ़ने वाले दोनों अपने आप को धन्य समझते थे। विद्यार्थी शैक्षणिक उपाधियों के साथ-साथ जीवन जीने की कला और कौशल को भी अपने व्यक्तित्व का अंग बनाते थे। ऐसे विद्यार्थी ही आगे चलकर परिवार, समाज, राज्य और राष्ट्र को समुन्नत बनाते थे। जिसके आधार पर ही हमारा समाज एक उन्नत समाज और राष्ट्र था। यह कहना है हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ का। प्रो. कुहाड़ कहते हैं कि स्वामी विवेकानंद जी ने अपने शिकागो भाषण में कहा था कि शिक्षा वह मात्रा नहीं है जो आपके मस्तिष्क में डाली जाती है और वहां वह बिना पचे, जीवन भर, जीवन की उधेड़बुन में लगी रहे, बल्कि वह तो जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण, चरित्र-निर्माण, व्यक्ति-निर्माण, व्यक्तित्व-निर्माण और विचारों को प्रखर बनाती है। प्रो. कुहाड़ कहते हैं कि उपनिषदों का सार श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए कहा है कि कर्मों में कुशलता ही योग है। कौशल का मानव जीवन में बड़ा महत्व है। यह कौशल हमारे जीवन में जितना अधिक होगा हम जीवन को उतनी सुगमता के साथ आगे बढ़ा सकेंगे। मानव जीवन सुगम बने इसीलिए उसके शिक्षण और प्रशिक्षण पर भारत सरकार का शिक्षा मन्त्रालय विशेष बल दे रहा है। भारतीय तकनीकी शैक्षणिक परिषद और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए कौशल के विकास पर विशेष बल

दिया है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने विद्यार्थियों में कौशल का विकास किस आधार पर हो इसके लिए मार्गदर्शिका बनाई है। उसी मार्गदर्शिका में विद्यार्थियों में किन जीवन-कौशलों का होना आवश्यक है? इस पर विस्तृत चर्चा की गई है। यह चर्चा आज के समय में सार्थक प्रतीत होती है क्योंकि विद्यार्थियों के पास अच्छा ज्ञान उपाधि होती है, लेकिन उनके पास व्यवसायिक, पेशेवर कुशलता की कमी के कारण वे औद्योगिक क्षेत्र और समाज के लिए उतने कार्य सक्षम नहीं होते हैं, जितनी उनसे उम्मीद की जाती है। इस प्रकार की कुशलता को देकर विश्वविद्यालय, महाविद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थान अपने विद्यार्थियों में उस कमी को दूर कर सकेंगे जिससे कि वे औद्योगिक क्षेत्र और समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे। कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने आगे कहा कि किसी विशेष कार्य, व्यवसाय के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल के अलावा, एक व्यक्ति को सफल, संतुष्ट जीवन के लिए उसका नियोजन सही तरीके से हो सके, इसके लिए पेशेवर कौशल की भी आवश्यकता होती है। गलाकाट प्रतियोगिताओं के वर्तमान समय में, मनुष्य को सामुदायिक जीवन में, उन मूल्यों को बचा कर रखना होगा जिनके द्वारा वह तकनीकी केंद्रित जीवन शैली में अपने आप को स्वस्थ व समुन्नत बना सके। उन्होंने आगे जोड़ते हुए स्पष्ट किया कि इसके लिए, उसे सबके साथ मिलकर सब के हित में कार्य करना होगा और यह कार्य करने का तरीका उसमे नेतृत्व कौशल को जन्म देगा। यह नेतृत्व कौशल विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को दिया जा सकता है ताकि वे भविष्य में आने वाली चुनौतियों को अवसरों में बदल सकें और रचनात्मक समाधान विकसित करके भविष्य के पथ प्रदर्शक बन सकें। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों में कौशल के विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों से दक्ष आचार्यों और पेशेवरों को कार्यशाला और व्याख्यान के लिए आमंत्रित करता रहता है ताकि विद्यार्थी शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ औद्योगिक और सामाजिक जरूरत के कौशलों को भी सीख सकें। प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि वर्तमान विश्व की परिस्थितियों को देखते हुए हमें विद्यार्थियों की सोच, उनके शिक्षण और प्रशिक्षण में बदलाव की आवश्यकता है ताकि उनमें संचार कौशल, पेशेवर कौशल, नेतृत्व और प्रबंधन कौशल, पारस्परिक कौशल और युगानुकूल मानवीय मूल्यों जैसे जीवन कौशल प्रदान कर उन्हें बेहतर प्रतिभा सम्पन्न नागरिक बनाया जा सके। छात्र अपने विचारों और दृष्टिकोण से विभिन्न विषयों में ज्ञान प्राप्त करते हैं। लेकिन वे समूह में कार्य करने, समय प्रबंधन, संचार की कला, नेतृत्व गुण आदि जैसे व्यक्तिगत गुण जो किसी को अन्य लोगों के साथ प्रभावी ढंग से और सामंजस्यपूर्ण तरीके से बातचीत करने में सक्षम बनाते हैं, सीखने में विफल रहते हैं जो बहु-सांस्कृतिक आधुनिक जीवन में सेवा करने के लिए अत्यधिक आवश्यक है, इसलिए उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए छात्रों को ऐसे कौशलों को सीखने के लिए प्रेरित करना समय की मांग है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय तकनीकी शैक्षणिक परिषद दोनों के द्वारा विद्यार्थियों के लिए दिया गया यह अनुपम सुझाव तभी सार्थक हो सकेगा

हरिभूमि

रोहतक -महेन्द्रगढ़

28 May 2021

छात्रों को जीवन कौशल सीखने को प्रेरित किया

महेंद्रगढ़। केंद्रीय विश्वविद्यालय का भवन। फोटो : हरिभूमि

महेंद्रगढ़। केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति आरसी कुहाड़ ने कहा कि हम सभी भारत के स्वर्णिम अतीत से भलीभांति अवगत हैं। इसका वर्णन हम सब बार-बार करते हैं कि हमारा राष्ट्र भारत कभी विश्व गुरु था। उस विश्व गुरु बनने के पीछे हमारे यहां का ज्ञान, विज्ञान, कला, कौशल, तकनीकी, चरित्र, चिंतन व्यक्तित्व व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की उन्नति और प्रगति ही उसके लिए जिम्मेदार थी। हमारे यहां के प्राचीन गौरवमयी विश्वविद्यालय नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि शिक्षा, ज्ञान, कला और कौशल के बड़े केंद्र थे जहां पढ़ाने और पढ़ने वाले दोनों अपने आप को धन्य समझते थे। यहां जारी विज्ञप्ति में उन्होंने कहा कि जीवन में सेवा करने के लिए अत्यधिक आवश्यक हैं इसलिए उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए छात्रों को ऐसे कौशलों को सीखने के लिए प्रेरित करना समय की मांग है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय तकनीकी शैक्षणिक परिषद दोनों के द्वारा विद्यार्थियों के लिए दिया गया यह अनुपम सुझाव तभी सार्थक हो सकेगा। जब

पेशागत कौशल समय की मांग : प्रो. कुहाड़

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : हम सभी भारत के स्वर्णिम अतीत से भली-भांति अवगत हैं। इसका वर्णन हम सब बार-बार करते हैं कि हमारा राष्ट्र भारत कभी विश्व गुरु था। उस विश्व गुरु बनने के पीछे हमारे यहां का ज्ञान, विज्ञान, कला, कौशल, तकनीकी, चरित्र चिंतन, व्यक्तित्व व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की उन्नति और प्रगति ही उसके लिए जिम्मेदार थीं। हमारे यहां के प्राचीन गौरवमयी विश्वविद्यालय नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला शिक्षा, ज्ञान, कला और कौशल के बड़े केंद्र थे, जहां पढ़ाने और पढ़ने वाले दोनों अपने आप को धन्य समझते थे। विद्यार्थी शैक्षणिक उपाधियों के साथ-साथ जीवन जीने की कला और कौशल को भी अपने व्यक्तित्व का अंग बनाते थे। ऐसे विद्यार्थी ही आगे चलकर परिवार, समाज, राज्य और राष्ट्र को उन्नत बनाते थे। यह बातें हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहीं।

प्रो. कुहाड़ कहते हैं कि स्वामी विवेकानंद ने अपने शिकागो भाषण में कहा था कि शिक्षा केवल वह नहीं है, जो आपके मस्तिष्क में डाली जाती है और वहां वह बिना पचे, जीवन

प्रो. आरसी कुहाड़ ● जागरण

भर, जीवन की उधेड़बुन में लगी रहे, बल्कि वह तो जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण, चरित्र-निर्माण, व्यक्ति-निर्माण, व्यक्तित्व-निर्माण और विचारों को प्रखर बनाती है।

उन्होंने कहा कि मानव जीवन सुगम बने, इसीलिए उसके शिक्षण और प्रशिक्षण पर भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय विशेष बल दे रहा है। भारतीय तकनीकी शैक्षणिक परिषद और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए कौशल के विकास पर विशेष बल दिया है। कुलपति ने कहा कि किसी विशेष कार्य, व्यवसाय के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल के अलावा, एक व्यक्ति को सफल, संतुष्ट जीवन के लिए उसका नियोजन सही तरीके से हो सके, इसके लिए पेशेवर कौशल की भी आवश्यकता होती है। गलाकाट प्रतियोगिताओं के वर्तमान समय में, मनुष्य को सामुदायिक जीवन में, उन मूल्यों को बचा कर रखना होगा जिनके द्वारा वह तकनीकी केंद्रित जीवन शैली में अपने आप को स्वस्थ व समुन्नत बना सके। उन्होंने आगे जोड़ते हुए स्पष्ट किया कि इसके लिए, उसे सबके साथ मिलकर सब के हित में कार्य करना होगा और यह कार्य करने का तरीका उसमे नेतृत्व कौशल को जन्म देगा।

प्रो. कुहाड़ ने कहा कि वर्तमान विश्व की परिस्थितियों को देखते हुए हमें विद्यार्थियों की सोच, उनके शिक्षण और प्रशिक्षण में बदलाव की आवश्यकता है, ताकि उनमें संचार कौशल, पेशेवर कौशल, नेतृत्व और प्रबंधन कौशल, पारस्परिक कौशल और युगानुकूल मानवीय मूल्यों जैसे जीवन कौशल प्रदान कर उन्हें बेहतर प्रतिभा सम्पन्न नागरिक बनाया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अग्रसर

राष्ट्रीय खबर ब्यूरो

चंडीगढ़: तीन दशक से भी अधिक के लंबे अंतराल के बाद घोषित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सफलतम क्रियान्वयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद् में इस नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन को हरी झंडी मिलने के बाद अब विश्वविद्यालय ने विभागीय स्तर पर इसे लागू करने हेतु पाठ्यक्रम निर्धारण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने इसी उद्देश्य से मंगलवार को सभी अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों के साथ मैराथन चर्चा की। कुलपति ने स्पष्ट किया कि हम नई शिक्षा की मूल आत्मा भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र में रखते हुए ग्लोबल शिक्षा व्यवस्था को तैयार करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रमों के निर्धारण में जुटे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पाठ्यक्रम के 40 फीसद भाग को आभासी माध्यम से और 60 फीसद भाग को पूर्व की भाँति कक्षाओं में शिक्षण के लिए विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को निर्देशित किया है। उसके लिए भी सभी अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों को उसी के अनुरूप अपने विषय में परिवर्तन करने के लिए निर्देशित किया गया।

कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नेतृत्व व शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के मार्गदर्शन में जारी प्रयासों को केंद्र में रखते हुए हम निरंतर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन को लेकर अग्रसर हैं। प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय के विभागों की ओर से प्रस्तुत किए जा रहे उनके पाठ्यक्रमों के प्रारूपों में भारत की पुरातन ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के लिए रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा हैं। विश्वविद्यालय अपने इन प्रयासों के अंतर्गत गीता का ज्ञान, संस्कृत भाषा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ-साथ पुस्तक प्रकाशन, सृजनात्मक लेखन, अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, वार्तालाप कौशल जैसे रोजगारपरक पक्षों को भी विभिन्न पाठ्यक्रमों में शामिल कर रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि हमारी कोशिश है कि आगामी सत्र की शुरूआत से पूर्व ही हम नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप नए पाठ्यक्रमों के निर्धारण की प्रक्रिया पूर्ण कर लें ताकि समय रहते नए बदलावों के अनुरूप अध्ययन-अध्यापन कार्य किया जा सके। कुलपति ने इस अवसर पर कहा कि विभिन्न पाठ्यक्रमों के निर्धारण के लिए आवश्यक नियामक संस्थानों के दिशा-निर्देशों की अनुपालना भी सुनिश्चित की जा रही है, इतना ही नहीं विश्वविद्यालय इस संबंध में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से प्राप्त होने निर्देशों की अनुपालना को लेकर भी गंभीर है और आयोग की ओर से इसके लिए निर्देश प्राप्त होने पर उनके अनुरूप विषय वस्तु के लिए सुझाए गए परिवर्तनों को भी अंगीकार किया जाएगा।

उत्कृष्टता हेतु छात्रों को जीवन कौशलों को सीखने के लिए प्रेरित करना समय की मांग

महेंद्रगढ़ | विद्यार्थी ही आगे चलकर परिवार, समाज, राज्य और राष्ट्र को समुन्नत बनाते हैं। जिसके आधार पर ही समाज एक उन्नत राष्ट्र बनता है। यह कहना है हकेंवि, के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ का। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने शिकागो भाषण में कहा था कि शिक्षा वह मात्रा नहीं है जो आपके मस्तिष्क में डाली जाती है और वहां वह बिना पचे, जीवन भर, जीवन की उधेड़बुन में लगी रहे, बल्कि वह तो जीवन निर्माण, मानव-निर्माण, चरित्र-निर्माण, व्यक्ति-निर्माण, व्यक्तित्व-निर्माण और विचारों को प्रखर बनाती है। कुलपति ने कहा कि किसी विशेष कार्य, व्यवसाय के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल के अलावा, एक व्यक्ति को सफल, संतुष्ट जीवन के लिए उसका नियोजन सही तरीके से हो सके, इसके लिए पेशेवर कौशल की आवश्यकता होती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इसके लिए सबके साथ मिलकर सब के हित में कार्य करना होगा और यह कार्य करने का तरीका उसमे नेतृत्व कौशल को जन्म देगा। यह नेतृत्व कौशल विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों

पंजाब केसरी
THU,27 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 3

'नई शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन के लिए प्रारूप तैयार, विभागीय स्तर पर कार्य प्रारम्भ: कुलपति'

महेंद्रगढ़, 26 मई (मोहन, परमजीत): नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के योजनागत ढंग से क्रियान्वयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ ने विस्तृत प्रारूप तैयार कर लिया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ की अध्यक्षता में आयोजित अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों की ऑनलाइन बैठक के दूसरे दिन विभागीय स्तर पर पाठ्यक्रम निर्धारण के एकरूपीय प्रारूप पर विस्तार से चर्चा हुई और सभी ने इस प्रारूप के अनुरूप अपने पाठ्यक्रम को तैयार करने पर सहमति जताई। कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि दो दिनों की चर्चा के बाद विश्वविद्यालय स्तर पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन हेतु एक विस्तृत दिशा-निर्देश केंद्रित प्रारूप निर्धारित कर लिया है।

कुलपति ने कहा कि अब सभी विभाग इस निर्धारित प्रारूप के अनुरूप अपने पाठ्यक्रम का निर्धारण करेंगे और उसके क्रियान्वयन की समयबद्ध योजना प्रस्तुत करेंगे। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय स्तर पर निर्धारित 14 बिन्दुओं में पृष्ठभूमि, प्रोग्राम ऑऊटकम, प्रोग्राम विशिष्ट परिणाम, स्नातकोत्तर विशेषज्ञता, पाठ्यक्रम का प्रारूप, अधिगम परिणाम सूचकांक, सत्र आधारित पाठ्यक्रम व क्रैडिट का निर्धारण, पाठ्यक्रम आधारित अध्ययन परिणाम, अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया, बेलेंडिड लर्निंग तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया का प्रमुख रूप से शामिल किया गया है। कुलपति ने कहा कि अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों की बैठक में हुई चर्चा के बाद अब विश्वविद्यालय स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन को लेकर एकरूपता केंद्रित प्रारूप तैयार किया गया है। जिसके आधार पर सभी विभाग अपने पाठ्यक्रम को तैयार करेंगे और फिर से विभिन्न स्तरों पर आवश्यक विमर्श के बाद इन्हें अंतिम रूप दिया जाएगा। यह भी तय किया गया कि पाठ्यक्रम का प्रत्येक वर्ष पुनर्मूल्यांकन किया जाएगा। कुलपति ने कहा कि अवश्य ही विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रारूप नई शिक्षा नीति के मूल उद्देश्यों को पूर्ण करने वाला और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों को देखते हुए पाठ्यक्रम में 40 प्रतिशत आभासी माध्यम से और 60 प्रतिशत भाग को पूर्व की भांति कक्षाओं में शिक्षण के आधार पर केंद्रित होगा।

हरिभूमि
रोहतक -महेन्द्रगढ़
27 May 2021

नई शिक्षा नीति के क्रियांवयन के लिए प्रारूप की तैयार शुरू

महेंद्रगढ़। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के योजनागत ढंग से क्रियान्वयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने विस्तृत प्रारूप तैयार कर लिया है। विवि के वीसी प्रो. आरसी कुहाड़ की अध्यक्षता में अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों की ऑनलाइन बैठक के दूसरे दिन विभागीय स्तर पर पाठ्यक्रम निर्धारण के एकरूपीय प्रारूप पर विस्तार से चर्चा हुई और सभी ने इस प्रारूप के अनुरूप अपने पाठ्यक्रम को तैयार करने पर सहमति जताई। कुलपति कुहाड़ ने कहा कि दो दिन की चर्चा के बाद विवि स्तर पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियावयन को विस्तृत दिशा-निर्देश केंद्रित

नई शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन के लिए प्रारूप तैयार

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़: नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के योजनागत ढ़ंग से क्रियान्वयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विवि महेंद्रगढ़ ने विस्तृत प्रारूप तैयार कर लिया है। विवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ की अध्यक्षता में आयोजित अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों की आनलाइन बैठक के दूसरे दिन विभागीय स्तर पर पाठ्यक्रम निर्धारण के एकरूपीय प्रारूप पर विस्तार से चर्चा हुई और सभी ने इस प्रारूप के अनुरूप अपने पाठ्यक्रम को तैयार करने पर सहमति जताई। कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि दो दिनों की चर्चा के बाद विश्वविद्यालय स्तर पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन के लिए एक विस्तृत दिशा-निर्देश केंद्रित प्रारूप निर्धारित कर लिया है। कुलपति ने कहा कि अब सभी विभाग इस निर्धारित प्रारूप के अनुरूप अपने पाठ्यक्रम का निर्धारण करेंगे और उसके क्रियान्वयन की समयबद्ध योजना प्रस्तुत करेंगे। कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि विश्वविद्यालय स्तर पर निर्धारित 14 बिंदुओं में पृष्ठभूमि, प्रोग्राम आउटकम, प्रोग्राम विशिष्ठ परिणाम, स्नातकोत्तर विशेषज्ञता, पाठ्यक्रम का प्रारूप, सूचकांक, सत्र आधारित पाठ्यक्रम व क्रेडिट का निर्धारण, अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया, ब्लेंडिड लर्निंग तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया का

नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिए प्रारूप तैयार : कुहाड़

महेंद्रगढ़। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के योजनागत ढंग से क्रियान्वयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेविवि), महेंद्रगढ़ ने विस्तृत प्रारूप तैयार कर लिया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ की अध्यक्षता में आयोजित अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों, विभाग प्रभारियों की ऑनलाइन बैठक के दूसरे दिन विभागीय स्तर पर पाठ्यक्रम निर्धारण के एक रूपीय प्रारूप पर विस्तार से चर्चा हुई और सभी ने इस प्रारूप के अनुरूप अपने पाठ्यक्रम को तैयार करने पर सहमति जताई। कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि दो दिनों की चर्चा के बाद विश्वविद्यालय स्तर पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियांवयन हेतु एक विस्तृत दिशा-निर्देश केंद्रित प्रारूप निर्धारित कर लिया है। कुलपति ने कहा कि अब सभी विभाग इस निर्धारित प्रारूप के अनुरूप अपने पाठ्यक्रम का निर्धारण करेंगे और उसके क्रियांवयन की समयबद्ध योजना प्रस्तुत करेंगे।

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि विश्वविद्यालय स्तर पर निर्धारित 14 बिंदुओं में पृष्ठभूमि, प्रोग्राम ऑउटकम, प्रोग्राम विशिष्ठ परिणाम, स्नातकोत्तर विशेषज्ञता, पाठ्यक्रम का प्रारूप, अधिगम परिणाम सूचकांक, सत्र आधारित पाठ्यक्रम, क्रेडिट का निर्धारण, पाठ्यक्रम आधारित अध्ययन परिणाम, अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया, बेलेंडिड लर्निंग, मूल्यांकन की प्रक्रिया का प्रमुख रूप से शामिल किया गया है। कुलपति ने कहा कि अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों, विभाग प्रभारियों की बैठक में हुई चर्चा के बाद अब विश्वविद्यालय स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियांवयन को लेकर एकरूपता केंद्रित प्रारूप तैयार किया गया है। जिसके आधार पर सभी विभाग अपने पाठ्यक्रम को तैयार करेंगे और फिर से विभिन्न स्तरों पर आवश्यक विमर्श के बाद इन्हें अंतिम रूप दिया जाएगा। यह भी तय किया गया कि पाठ्यक्रम का प्रत्येक वर्ष पुनर्मूल्यांकन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अवश्य ही विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रारूप नई शिक्षा नीति के मूल उद्देश्यों को पूर्ण करने वाला और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों को देखते हुए पाठ्यक्रम में 40 प्रतिशत आभासी माध्यम से और 60 प्रतिशत भाग को पूर्व की भांति कक्षाओं में शिक्षण के आधार पर केंद्रित होगा। प्रो. आरसी कुहाड़ ने बताया कि हमारा संकल्प है कि इस दिशा में लक्ष्य निर्धारित कर विभिन्न विभागों, संकायों, विश्वविद्यालय स्तर पर आपसी सहयोग, समन्वय के आधार पर कार्य हो और हम नई शिक्षा नीति का अधिकतम लाभ विद्यार्थियों तक पहुंचाया जा सके और उनके सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सके। शिक्षकों को अपने मस्तिष्क को खुला रखना चाहिए और उन्हें विद्यार्थियों के हित के बारे में सदैव चिंतन करना चाहिए। सवाद

पंजाब केसरी
WED,26 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 3

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वायन की दिशा में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अग्रसर: प्रो. आर.सी. कुहाड़

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को लेकरअधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों के साथ की बैठक'

महेंद्रगढ़, 25 मई (मोहन, परमजीत): तीन दशक से भी अधिक के लंबे अंतराल के बाद घोषित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सफलतम क्रियान्वयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद में इस नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन को हरी झंडी मिलने के बाद अब विश्वविद्यालय ने विभागीय स्तर पर इसे लागू करने हेतु पाठ्यक्रम निर्धारण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने इसी उद्देश्य से मंगलवार को सभी अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों के साथ मैराथन चर्चा की।

कुलपति ने स्पष्ट किया कि हम नई शिक्षा की मूल आत्मा भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र में रखते हुए ग्लोबल शिक्षा व्यवस्था को तैयार करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रमों के निर्धारण में जुटे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पाठ्यक्रम के 40 फीसदी भाग को आभासी माध्यम से और 60 फीसद भाग को पूर्व की भांति कक्षाओं में शिक्षण के लिए विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को निर्देशित किया है। इसके लिए सभी अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों को उसी के अनुरूप अपने विषय में परिवर्तन करने के लिए निर्देशित किया गया।

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति आर.सी. कुहाड़।

कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व व शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के मार्गदर्शन में जारी प्रयासों को केंद्र में रखते हुए हम निरंतर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन को लेकर अग्रसर हैं।

विश्वविद्यालय अपने इन प्रयासों के अंतर्गत गीता का ज्ञान, संस्कृत भाषा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ-साथ पुस्तक प्रकाशन, सृजनात्मक लेखन, अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, वार्तालाप कौशल जैसे रोजगारपरक पक्षों को भी विभिन्न पाठ्यक्रमों में शामिल कर रहा है। कुलपति ने कहा कि हमारी कोशिश है कि आगामी सत्र की शुरूआत से पूर्व ही हम नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप नए पाठ्यक्रमों के निर्धारण की प्रक्रिया पूर्ण कर लें, ताकि समय रहते नए बदलावों के अनुरूप अध्ययन-अध्यापन कार्य किया जा सके। कुलपति ने इस अवसर पर कहा कि विभिन्न पाठ्यक्रमों के निर्धारण के लिए आवश्यक नियामक संस्थानों के दिशा-निर्देशों की अनुपालना भी सुनिश्चित की जा रही है।

इतना ही नहीं विश्वविद्यालय इस संबंध में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से प्राप्त निर्देशों की अनुपालना को लेकर भी गंभीर है और आयोग की ओर से इसके लिए निर्देश प्राप्त होने पर उनके अनुरूप विषय-वस्तु के लिए सुझाए गए परिवर्तनों को भी अंगीकार किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में हकेंवि अग्रसर : कुहाड़

अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों के साथ बैठक

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : तीन दशक से भी अधिक के लंबे अंतराल के बाद घोषित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सफलतम क्रियान्वयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ निरंतर प्रयासरत हैं। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद् में इस नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन को हरी झंडी मिलने के बाद अब विश्वविद्यालय ने विभागीय स्तर पर इसे लागू करने के लिए पाठ्यक्रम निर्धारण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने इसी उद्देश्य से मंगलवार को सभी अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों व विभाग प्रभारियों के साथ मैराथन चर्चा की। कुलपति ने स्पष्ट किया कि हम नई शिक्षा की मूल आत्मा भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र में रखते हुए ग्लोबल शिक्षा व्यवस्था को तैयार करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रमों के निर्धारण में जुटे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पाठ्यक्रम के 40 फीसद भाग को आभासी माध्यम से और 60 फीसद भाग को पूर्व की भांति कक्षाओं में शिक्षण के लिए

प्रो. आरसी कुहाड़ ● जागरण

विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को निर्देशित किया है। उसके लिए भी सभी अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों को उसी के अनुरूप अपने विषय में परिवर्तन करने के लिए निर्देशित किया गया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नेतृत्व व शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के मार्गदर्शन में जारी प्रयासों को केंद्र में रखते हुए हम निरंतर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वतयन को लेकर अग्रसर हैं। प्रो. आरसी कुहाड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय के विभागों की ओर से प्रस्तुत किए जा रहे उनके पाठ्यक्रमों के प्रारूपों में भारत की पुरातन ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के लिए रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा हैं। विश्वविद्यालय अपने इन प्रयासों के अंतर्गत गीता का ज्ञान, संस्कृत भाषा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ-साथ पुस्तक प्रकाशन, सृजनात्माक लेखन, अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, वार्तालाप कौशल जैसे रोजगारपरक पक्षों को भी विभिन्न पाठ्यक्रमों में शामिल कर रहा है। हमारी कोशिश है कि आगामी सत्र की शुरूआत से पूर्व ही हम नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप नए पाठ्यक्रमों के निर्धारण की प्रक्रिया पूर्ण कर लें, ताकि समय रहते नए बदलावों के अनुरूप अध्ययन-अध्यापन कार्य किया जा सके। पाठ्यक्रमों के निर्धारण के लिए आवश्यक नियामक संस्थानों के दिशा-निर्देशों की अनुपालना भी सुनिश्चित की जा रही है, इतना ही नहीं विवि इस संबंध में विवि अनुदान आयोग की ओर से प्राप्त होने निर्देशों की अनुपालना को लेकर भी गंभीर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अग्रसर

संवाद न्यूज एजेसी

महेंद्रगढ़। तीन दशक से भी अधिक के लंबे अंतराल के बाद घोषित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सफलतम क्रियांवयन के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेविवि), महेंद्रगढ़ निरंतर प्रयासरत है।

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद् में इस नई शिक्षा नीति के क्रियांवयन को हरी झंडी मिलने के बाद अब विश्वविद्यालय ने विभागीय स्तर पर इसे लागू करने हेतु पाठ्यक्रम निर्धारण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने इसी उद्देश्य से मंगलवार को सभी अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों, विभाग प्रभारियों के साथ मैराथन चर्चा की।

कुलपति ने स्पष्ट किया कि हम नई शिक्षा की मूल आत्मा भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र में रखते हुए ग्लोबल शिक्षा व्यवस्था को तैयार करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रमों के निर्धारण में जुटे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पाठ्यक्रम के 40 फीसदी भाग को आभासी माध्यम से और 60 फीसद भाग को पूर्व की भांति कक्षाओं में शिक्षण के लिए विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को निर्देशित किया है। उसके लिए भी सभी अधिष्ठाताओं, विभागाध्यक्षों को उसी के अनुरूप अपने विषय में परिवर्तन करने के लिए निर्देशित किया गया। कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नेतृत्व, शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के मार्गदर्शन में जारी प्रयासों को केंद्र में रखते हुए हम निरंतर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन को लेकर अग्रसर हैं। प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय के विभागों की ओर से प्रस्तुत किए जा रहे उनके पाठ्यक्रमों के प्रारूपों में भारत की पुरातन ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के लिए रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा हैं।

हरिभूमि
रोहतक -महेन्द्रगढ़
25 May 2021

महेंद्रगढ़। हकेंविवि में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार में हिस्सा लेते हुए। फोटो : हरिभूमि

नई तकनीकी व शोध से आत्मनिर्भर होगा भारत

- हकेंवि में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत वेबिनार का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

भारत एक कृषि प्रधान देश है और ऐसे में जरूरी हो जाता है कि इस क्षेत्र को शोध, नई तकनीक व नवाचार के सहारे इतना सबल बनाया जाए कि इसके माध्यम से भारतीय अर्थव्यरवस्था में उल्लेखनीय योगदान संभव हो सके। खाद्य क्षेत्र में तकनीकी योगदान व शोध के सहारे हम प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा दिखाए गए आत्मानिर्भर भारत के सपने को साकार कर विश्व पटल पर अपनी अलग पहचान कायम कर सकते हैं। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने आजादी का अमृत महोत्सववव अभियान के अन्तर्गत सोमवार को आयोजित विशेषज्ञ प्रिंसिपल साइंटिस्टप डा. दयाकर राव बी ने संबोधित किया। विवि के अंतर्विषयी एवं व्यवहारिक विज्ञान संकाय के द्वारा स्वतंत्रता के बाद भारत में स्वतंत्रता के बाद के भारत में प्रसंस्कृत भोजन का चलन पर केंद्रित इस वेबिनार की शुरूआत विश्वतविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई और इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूरमेंटी फिल्म दिखाई गई। विश्व विद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के महत्वस पर प्रकाश डाला। अंतर्विषयी एवं व्यवहारिक विज्ञान संकाय की अधिष्ठायता व आयोजन की संयोजक प्रो. नीलम सांगवान ने विषय का परिचय देते हुए विशेषज्ञोंए वक्तारओं व उनके उल्लेवखनीय योगदान से अवगत कराया। वेबिनार के मुख्य वक्ता उड़ीसा कृषि एवं तकनीकी विवि के

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सदैव तत्पर रहें: प्रो. आरसी

जगमार्ग न्यूज

महेंद्रगढ़। आतंकवाद विरोधी दिवस के अवसर पर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में शुक्रवार को ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कुहाड़ ने सभी उपस्थित शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को आतंकवाद के खिलाफ हर सम्भव योगदान देने के लिए सदैव तत्पर रहने और देश की एकता, अखंण्डता और मानव मूल्यों की रक्षा के लिए मिलकर प्रयास करने की शपथ दिलाई।

विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठता कार्यालय व कुलसचिव कार्यालय के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति ने कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों की सराहना की ओर

सहभागियों की संख्या में बढ़ोत्तरी के लिए आवश्यक प्रयास करने पर भी जोर दिया।

अपने संबोधन में आतंकवाद की समस्या को भारत ही नहीं बल्कि समूचे विश्व के समक्ष उपस्थित चुनौती बताया और कहा कि हम इसका मुकाबला मिलकर ही कर सकते है इसलिए सदैव आतंकवाद के खिलाफ जारी लड़ाई में अपनी क्षमता के अनुसार योगदान के लिए तत्पर रहें।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में योगदान को तत्पर रहें : कुहाड़

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : आतंकवाद विरोधी दिवस के अवसर पर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) महेंद्रगढ़ में शुक्रवार को आनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने सभी उपस्थित शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को आतंकवाद के खिलाफ हर संभव योगदान देने के लिए सदैव तत्पर रहने को कहा। उन्होंने देश की एकता, अखंडता और मानव मूल्यों की रक्षा के लिए मिलकर प्रयास करने की शपथ भी दिलाई। विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता कार्यालय व कुलसचिव कार्यालय के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति ने कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों की सराहना की ओर सहभागियों की संख्या में बढ़ोतरी के लिए आवश्यक प्रयास करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने इस अवसर पर अपने संबोधन में उपस्थित चुनौती बताया और कहा कि हम इसका मुकाबला मिलकर ही कर सकते हैं इसलिए सदैव आतंकवाद के खिलाफ जारी लड़ाई में अपनी क्षमता के अनुसार योगदान के लिए तत्पर रहें। इस अवसर पर कुलपति ने विश्वविद्यालय शिक्षकों की अकादमिक प्रगति पर भी चर्चा की और प्रत्येक शिक्षक से कम से कम दो अनुसंधान पत्र संपादित करने और दो अनुसंधान परियोजनाएं अगले तीन महीनों में वित्तीय सहायता हेतु अनुसंधान के लिए अनुदान देने वाले अभिकरणों को भेजने की भी सलाह दी। इस मौके पर विभिन्न विभागों के शिक्षकों ने अपनी उपलब्धियों से अवगत कराया। डा. सुरेंद्र कुमार, डा. हरीश कुमार, डा. विकास गर्ग, डा. दिनेश कुमार, डा. इंद्रजीत कौर, डा. मनोज गुप्ता, डा. राम गोपाल निठरवाल ने शोध पत्र प्रकाशित होने की जानकारी दी। विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन

आतंक के विरूद्ध योगदान में तत्पर रहें : प्रो. कुहाड़

महेंद्रगढ़ | आतंकवाद विरोधी दिवस पर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में शुक्रवार को ऑनलाइन कार्यक्रम हुआ। विवि के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को आतंकवाद के खिलाफ हर संभव योगदान देने के लिए सदैव तत्पर रहने और देश की एकता, अखंडता और मानव मूल्यों की रक्षा के लिए मिलकर प्रयास करने की शपथ दिलाई।

कुलपति ने कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों की सराहना की और सहभागियों की संख्या में बढ़ोत्तरी के लिए आवश्यक प्रयास करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने संबोधन में आतंकवाद की समस्या को भारत ही नहीं बल्कि समूचे विश्व के समक्ष उपस्थित चुनौती बताया और कहा कि हम इसका मुकाबला मिलकर ही कर सकते है। प्रो. कुहाड़ ने शिक्षकों की अकादमिक प्रगति पर भी चर्चा की और प्रत्येक शिक्षक से कम से कम दो अनुसंधान पत्र सम्पादित करने और दो अनुसंधान परियोजनाएं अगले तीन महीनों में वित्तीय सहायता हेतु अनुसंधान के लिए अनुदान देने वाले अभिकरणों को भेजने की भी सलाह दी। डॉ. सुरेंद्र कुमार, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विकास गर्ग, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. इंद्रजीत कौर, डॉ. मनोज गुप्ता, डॉ. राम गोपाल निठरवाल ने पिछले कुछ समय में उनके द्वारा एक से 5 इंपेक्ट फैक्टर वाले शोध पत्र प्रकाशित होने की जानकारी उपलब्ध कराई। इस कार्यक्रम में शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़े लगभग 90 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन उप छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. आनंद शर्मा ने किया।

पंजाब केसरी
FRI,21 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 3

हकेंवि में 'बीम टैक्नोलॉजी पर केन्द्रित' विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित

नारनौल, 20 मई (विजय कौशिक): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ में स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी (एस.ओ.ई.टी.) के अन्तर्गत आने वाले सिविल इंजीनियरिंग विभाग की ओर से बीम टैक्नोलॉजी पर केन्द्रित विशेषज्ञ व्याख्यान का ऑनलाइन आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में बीम टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने वाले इंजीनियर सागर चंद्रे ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी द्वारा आयोजित इस व्याख्यान को विद्यार्थियों के लिए बेहद उपयोगी बताया। उन्होंने अपने संदेश के माध्यम से कहा कि यह तकनीक सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में निर्माण कार्य से पूर्व थ्री डी मॉडल के विकास में उपयोगी है ऐसे में अवश्य ही इस

आयोजन से विद्यार्थियों को बहुत कुछ नया जानने-समझने का अवसर मिलेगा।

विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डा. विकास गर्ग ने बताया कि एस.ओ.ई.टी. के डीन डा. अजय कुमार बंसल के सहयोग से आयोजित 'बीम टैक्नोलॉजी इम्पलिमैंटेशन फोर ए.ई.सी. इंडस्ट्री' विषय पर केन्द्रित इस ऑनलाइन व्याख्यान में विभाग के विद्यार्थियों व शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। व्याख्यान में विशेषज्ञ इंजीनियर सागर चंद्रे ने बताया कि बीम यानी बिल्डिंग इंफोर्मेशन मॉडलिंग तकनीक का आज के समय में आर्किटैक्ट, इंजीनियर, रीयल एस्टेट डिवैल्पर्स तथा निर्माण क्षेत्र से संबंध रखने वाले प्रोफैशनल किस तरह से निर्माण की योजना बनाने, डिजाइन तैयार करने, उसका थ्री डी मॉडल तैयार करने में उपयोग कर रहे हैं।

विशेषज्ञ ने बताया कि यह तकनीक मौजूदा समय में बेहद उपयोगी साबित हो रही है और इसकी मदद से निर्माण की रूपरेखा को बेहतर ढंग से प्रदर्शित किया जाता है जोकि निर्माण के लिए आवश्यक कार्ययोजना को निर्धारित करने में मददगार होता है।

एस.ओ.ई.टी. के डीन डा. अजय कुमार बंसल ने इस तकनीकी को नवीनतम बताते हुए इसे इंजीनियरों के लिए उपयोगी करार दिया।

निर्माण के क्षेत्र में अहम भूमिका निभार रही है बिम तकनीक

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़: हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ में स्कूल आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालाजी (एसओईटी) के अंतर्गत आने वाले सिविल इंजीनियरिंग विभाग की ओर से बिम टेक्नोलाजी पर केंद्रित विशेषज्ञ व्याख्यान का आनलाइन आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में बीम टेक्नोलाजी के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने वाले इंजीनियर सागर चंद्रे ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने स्कूल आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालाजी द्वारा आयोजित इस व्याख्यान को विद्यार्थियों के लिए बेहद उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि यह तकनीक सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में निर्माण कार्य से पूर्व थ्री डी माडल के विकास में उपयोगी है। ऐसे में अवश्य ही

प्रो. आरसी कुहाड़ ● जागरण

इस आयोजन से विद्यार्थियों को बहुत कुछ नया जानने का अवसर मिलेगा। विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डा. विकास गर्ग ने बताया कि एसओईटी के डीन डा. अजय कुमार बंसल के सहयोग से आयोजित बिम टेक्नालाजी इम्पलिमेंटेशन फोर एईसी इंडस्टी विषय पर केंद्रित इस आनलाइन व्याख्यान में विभाग के विद्यार्थियों व शिक्षकों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। व्याख्यान में विशेषज्ञ इंजीनियर सागर चंद्रे ने बताया कि बिम यानी बिल्डिंग इंफोर्मेशन माडलिंग तकनीक का आज के समय में आर्किटेक्ट, इंजीनियर, रीयल एस्टेट डेवलपर्स तथा निर्माण क्षेत्र से संबंध रखने वाले प्रोफेशनल किस तरह से निर्माण की योजना बनाने, डिजाइन तैयार करने, उसका थ्री डी माडल तैयार करने में उपयोग कर रहे हैं।

विशेषज्ञ ने बताया कि यह तकनीक मौजूदा समय में उपयोगी साबित हो रही है व इसकी मदद से निर्माण की रूपरेखा को बेहतर ढंग से प्रदर्शित किया जाता है, जोकि निर्माण के लिए आवश्यक कार्ययोजना को निर्धारित करने में मददगार होता है। एसओईटी के डीन डा. अजय बंसल ने तकनीकी को नवीनतम बताते हुए इंजीनियरों के लिए उपयोगी करार दिया।

व्याख्यान

हकेविवि में ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन, प्रो. कुहाड़ बोले-

बीम तकनीक सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उपयोगी

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेविवि), महेंद्रगढ़ में स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (एसओईटी) के अंतर्गत आने वाले सिविल इंजीनियरिंग विभाग की ओर से बीम टेक्नोलॉजी पर विशेषज्ञ व्याख्यान का ऑनलाइन आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में बीम टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने वाले इंजीनियर सागर चंद्रे ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।

कुलपति कुहाड़

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने इस व्याख्यान को विद्यार्थियों के लिए बेहद उपयोगी बताया। उन्होंने अपने संदेश के माध्यम से कहा कि यह तकनीक सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में निर्माण कार्य से पूर्व थ्री डी मॉडल के विकास में उपयोगी है ऐसे में अवश्य ही इस आयोजन से विद्यार्थियों को बहुत कुछ नया जानने समझने का अवसर मिलेगा।

विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विकास गर्ग ने बताया कि एसओईटी के डीन डॉ. अजय कुमार बंसल के सहयोग से आयोजित बीम टेक्नोलॉजी इंपलीमेंटेशन फॉर एईसी इंडस्टी विषय पर केंद्रित इस ऑनलाइन व्याख्यान में विभाग के विद्यार्थियों, शिक्षकों ने हिस्सा लिया। व्याख्यान में विशेषज्ञ इंजीनियर सागर चंद्रे ने बताया कि बीम यानी बिल्डिंग इंफोर्मेशन मॉडलिंग तकनीक का आज के समय में आर्किटेक्ट, इंजीनियर, रियल एस्टेट

यह तकनीक सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में निर्माण कार्य से पूर्व थ्री डी मॉडल के विकास में उपयोगी

डेवलपर्स और निर्माण क्षेत्र से संबंध रखने वाले प्रोफेशनल किस तरह से निर्माण की योजना बनाने, डिजाइन तैयार करने, उसका थ्री डी मॉडल तैयार करने में उपयोग कर रहे हैं। विशेषज्ञ ने बताया कि यह तकनीक मौजूदा समय में बेहद उपयोगी साबित हो रही है और इसकी मदद से निर्माण की रूपरेखा को बेहतर ढंग से प्रदर्शित किया जाता है जोकि निर्माण के लिए आवश्यक कार्ययोजना को निर्धारित करने में मददगार होता है। एसओईटी के डीन डॉ. अजय कुमार बंसल ने इस तकनीकी को नवीनतम बताते हुए इसे इंजीनियरों के लिए उपयोगी करार दिया।

ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में भाग ले कला का प्रदर्शन करें बच्चे

नारनौल। जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी बिजेंद्र श्योराण ने जिले के बच्चों से अपील करते हुए कहा कि वे हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद की ओर से आयोजित ऑनलाइन राज्य स्तरीय ग्रीष्मकालीन कैंप-2021 प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी कला का प्रदर्शन करें

ककककक

उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए बच्चे हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद की वेबसाइट www.childwelfareharyana.com पर उपलब्ध करवाए गए लिंक summervacation-camp.in पर जाकर रजिस्ट्रेशन फार्म भरें तथा किसी भी गतिविधि की परफॉर्मेंस की फोटो व वीडियो को अपलोड करके अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने बच्चों से अपील की, वे ऐसे स्पर्धा में भाग जरूर लें। संवाद

आजादी के मतवालों का बलिदान अविस्मरणीय : डॉ. पूनिया

महेंद्रगढ़। चेतना ब्यूरो।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित विशेषज्ञ व्याख्यान को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने व्यक्त किए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ सहित आमंत्रित विशेषज्ञ वक्ता गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. श्रीप्रकाश सिंह व जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. अश्वनी महापात्रा ने संबोधित किया। विश्वविद्यालय में इस कार्यक्रम का आयोजन का आयोजन दिव्यांगजन प्रकोष्ठ, प्रबंधन अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय सेवा योजना व यूथ रेड क्रास के साझा प्रयासों से किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा व उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजस्थान भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने अपने संबोधन में कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के विषय में कहा कि मैं आशावादी हूं, स्वतंत्रता सेनानी व किसान परिवार से हूं और मैं गर्व से कह सकता हूं कि मैं राष्ट्रवादी हूं, भारतवादी हूं और देश के प्रति अनुराग व प्रेम रखता हूं। उन्होंने आगे कहा कि भारत वो देश है जिसके प्रति समूचे विश्व की आंखे स्वामी विवेकानंद ने शिकागों में दिए अपने भाषण से खोल दी थी।

विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि आजादी अनमोल है और तुलसीदास की लिखी पंक्तियों के माध्यम से उन्होंने कहा कि आजादी का मतलब वहीं जान सकता है जो पराधीन रहा हो। कुलपति ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, भगत सिंह, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाला लाजपत राय, सुभाष चंद्र बोस,

चंद्रशेखर आजाद आदि का उल्लेख करते हुए कहा कि यहीं वो लोग थे जिनके त्याग, बलिदान के बूते हमें 15 अगस्त, 1947 का पावन दिन प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में आमंत्रित विशेषज्ञ वक्ता गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश ने कहा कि आजाद हिन्द फौज के साथ इतिहास के मोर्चे पर हुए अन्याय का भी उल्लेख किया और सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया।

आजादी का अमृत महोत्सव • हकेंवि में हुआ वेबिनार

आजादी के मतवालों का बलिदान अविस्मरणीय : डॉ. सतीश पूनिया

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

आजादी के मतवालों का बलिदान अविस्मरणीय है और यह हमारा कर्तव्य है कि हम न सिर्फ आजादी की आंदोलन में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले अमर शहीदों को याद रखें बल्कि उसे इतिहास में उचित स्थान प्रदान कर उनके त्याग, बलिदान को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त करें। यह विचार मंगलवार को हकेंवि द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित व्याख्यान को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने व्यक्त किए।

इस अवसर पर विवि के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ सहित आमंत्रित विशेषज्ञ वक्ता गौतमबुद्ध विवि के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश, दिल्ली विवि के प्रो. श्रीप्रकाश सिंह व जवाहरलाल नेहरू विवि के प्रो. अश्वनी महापात्रा ने संबोधित किया। कार्यक्रम का आयोजन दिव्यांगजन प्रकोष्ठ, प्रबंधन अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय सेवा योजना व यूथ रेड क्रास के साझा प्रयासों से किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजस्थान भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने कोरोना काल में सामाजिक सहयोग की अपील तथा प्रदेश स्तर पर उनके सहयोगी द्वारा किए जा रहे प्रयासों से अवगत कराया। उन्होंने आजादी के अमृत महोत्सव के विषय में कहा कि मैं आशावादी हूं, स्वतंत्रता सेनानी व किसान परिवार से हूं और मैं गर्व से कह सकता हूं कि मैं राष्ट्रवादी हूं, भारतवादी हूं और देश के प्रति अनुराग व प्रेम रखता हूं।

प्रो. कुहाड़ ने कहा आजादी का मतलब वहीं जान सकता है जो पराधीन रहा हो। कुलपति ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, भगत सिंह, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाला लाजपत राय, सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद आदि का उल्लेख करते हुए कहा कि यहीं वो लोग थे जिनके त्याग, बलिदान के बूते हमें 15 अगस्त, 1947 का पावन दिन प्राप्त हुआ।

पंजाब केसरी
SAT,15 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 4

'हकेंवि में ड्राई मिक्स मोर्टार टैक्नोलॉजी पर केन्द्रित वैबिनार आयोजित'

महेंद्रगढ़, 14 मई (मोहन, परमजीत): हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में निर्माण के क्षेत्र में तेजी से प्रसिद्ध हो रही ड्राई मिक्स मोर्टार टैक्नोलॉजी के महत्व पर केन्द्रित वैबिनार का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी (एस.ओ.ई.टी.) द्वारा आयोजित इस वैबिनार में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में जनरल मैनेजर एंड जोनल हैड (नार्थ) कस्टमर टैक्निकल सर्विसेज, जे.के. सीमैंट लिमिटेड आर.के. झा उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने विद्यार्थियों के लिए उनके पाठ्यक्रम पर केन्द्रित इस वैबिनार को बेहद उपयोगी बताया और अपने संदेश के माध्यम से कहा कि अवश्य ही इस आयोजन से विद्यार्थियों को निर्माण के क्षेत्र में तेजी से अपनी पकड़ बना रही इस नई तकनीक को जानने में मदद मिलेगी। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डा. विकास गर्ग ने वैबिनार के आरम्भ में विशेषज्ञ वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस तरह से आर.के. झा निर्माण के क्षेत्र में ड्राई मिक्स मोर्टार टैक्नोलॉजी के साथ कार्य कर रहे हैं।

तकनीक के माध्यम से निर्माण के क्षेत्र में आया बदलाव

डा. विकास गर्ग ने इस आयोजन के लिए एस.ओ.ई.टी. के डीन डा. अजय बंसल का भी उल्लेख करते हुए उनके सहयोग व मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। आर.के. झा ने अपने संबोधन में बताया कि किस तरह से इस तकनीक के माध्यम से निर्माण के क्षेत्र में बदलाव आया है। इस टैक्नोलॉजी के अंतर्गत निर्माण में प्रयोग होने वाली विभिन्न प्रकार की सामग्री के उपयोग व उनके फायदों से अवगत कराया।

उन्होंने बताया कि किस तरह से आज निर्माण के क्षेत्र में प्लास्टर, वाल केयर पुट्टी से लेकर ब्रिक्स और टाइल के स्तर पर इस तकनीक की मदद से निर्माण कार्य को सहज और समय की बचत व कम खर्च में किया जा रहा है। आर.के. झा ने वैबिनार के अंत में प्रतिभागियों की ड्राई मिक्स मोर्टार टैक्नोलॉजी से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के भी जवाब दिए। कार्यक्रम के अंत में सिविल इंजीनियरिंग विभाग के सहायक आचार्य डा. रणबीर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस वैबिनार के आयोजन सचिव डा. रणबीर सिंह व डा. विकास कुमार ने बताया कि यह आयोजन सिविल इंजीनियरिंग विभाग, स्टूडैंट्स चैप्टर ऑफ इंस्टीच्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) व जे.के. सीमैंट लिमिटेड के सांझा प्रयासों से किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों व शोधार्थियों ने हिस्सा लिया।

हरिभूमि

रोहतक -महेन्द्रगढ़

15 May 2021

यह काफी सहायक होगा। लोगों का इनका दखरख म काम करग।

ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नालॉजी पर वेबिनार

विभिन्न प्रकार की सामग्री के उपयोग व फायदों से अवगत कराया

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में निर्माण के क्षेत्र में तेजी से प्रसिद्ध हो रही ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नालॉजी के महत्व पर केंद्रित वेबिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालॉजी एसओईटी के द्वारा आयोजित इस वेबिनार में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में जनरल मैनेजर एंड जोनल हेड नार्थ कस्टमर टेक्निकल सर्विसेज जेके सीमेंट लिमिटेडआरके झा उपस्थित रहे। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालॉजी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डा. विकास गर्ग ने वेबिनार के आरंभ में विशेषज्ञ वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस तरह से आरके झा निर्माण के क्षेत्र में ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोशलॉजी के साथ कार्य कर रहे हैं। डा. विकास गर्ग ने इस आयोजन के लिए एसओईटी के डीन डा. अजय बंसल का भी उल्लेख करते हुए उनके सहयोग व मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। आरके झा ने अपने संबोधन में बताया कि किस तरह से इस तकनीक के माध्यम से निर्माण के क्षेत्र में बदलाव आया है। उन्होंने बताया कि इस टेक्नोलॉजी के अंतर्गत निर्माण में प्रयोग होने वाली विभिन्न प्रकार की सामग्री के उपयोग व उनके फायदों से अवगत कराया।

महेंद्रगढ़। हकेवि में आयोजित वेबिनार को संबोधित करते विशेषज्ञ।

धन्यवाद किया

कार्यक्रम के अंत में सिविल इंजीनियरिंग विभाग के सहायक आचार्य डा. रणबीर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस वेबिनार के आयोजन सचिव डा. रण बीर सिंह व डा. विकास कुमार ने बताया कि यह आयोजन सिविल इंजीनियरिंग विभाग, स्टूडेंट्स चेप्टर ऑफ इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया व जेके सीमेंट लिमिटेड के साझा प्रयासों से किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों व शोधार्थियों ने हिस्सा लिया।

आत्मिक शांति के लिए सवामणी का आयोजन

हकेंवि में ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी पर वेबिनार का किया गया आयोजन

महेंद्रगढ़| हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में निर्माण के क्षेत्र में तेजी से प्रसिद्ध हो रही ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी के महत्व पर वेबिनार का आयोजन किया गया। विवि के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी द्वारा आयोजित वेबिनार में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में आर के झा उपस्थित रहे। विवि के कुलपति प्रो.आर.सी.कुहाड़ ने विद्यार्थियों के लिए उनके पाठ्यक्रम पर केन्द्रित इस वेबिनार को बेहद उपयोगी बताया। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ. विकास गर्ग ने विशेषज्ञ वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया किस तरह से आर.के.झा निर्माण के क्षेत्र में ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी के साथ कार्य कर रहे हैं। डॉ. विकास गर्ग ने एसओईटी के डीन डॉ. अजय बंसल का भी उल्लेख करते हुए उनके सहयोग व मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी पर केंद्रित वेबिनार आयोजित

विद्यार्थियों को ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी का महत्व बताया

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में निर्माण के क्षेत्र में तेजी से प्रसिद्ध हो रही ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी के महत्व पर केंद्रित वेबिनार का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (एसओईटी) के द्वारा आयोजित इस वेबिनार में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में जनरल मैनेजर एंड जोनल हेड (नार्थ) कस्टमर टेक्निकल सर्विसेज, जेके सीमेंट लिमिटेड आरके झा उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने विद्यार्थियों के लिए उनके पाठ्यक्रम पर केंद्रित इस वेबिनार को बेहद उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि वेबिनार से विद्यार्थियों को निर्माण के क्षेत्र में तेजी से अपनी पकड़ बना रही इस नई तकनीक को जानने में मदद मिलेगी।

स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी ने किया आयोजन

स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ. विकास गर्ग ने वेबिनार के आरंभ में विशेषज्ञ वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस तरह से आरके झा निर्माण के क्षेत्र में ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी के साथ कार्यक्रम रहे हैं। डॉ. विकास गर्ग ने इस आयोजन के लिए एसओईटी के डीन डॉ. अजय बंसल का भी उल्लेख करते हुए उनके सहयोग, मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। आरके झा ने अपने संबोधन में बताया कि किस तरह से इस तकनीक के माध्यम से निर्माण के क्षेत्र में बदलाव आया है। उन्होंने बताया कि इस टेक्नोलॉजी के अंतर्गत निर्माण में प्रयोग होने वाली विभिन्न प्रकार की सामग्री के उपयोग और उनके फायदों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि किस तरह से आज निर्माण के क्षेत्र में प्लास्टर, वाल केयर पुट्टी से लेकर ब्रिक्स और टाइल के स्तर पर इस तकनीक की मदद से निर्माण कार्य को सहज और समय कि बचत व कम खर्च में किया जा रहा है। उन्होंने वेबिनार के प्रतिभागियों की ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के भी जवाब दिए।

कार्यक्रम में सिविल इंजीनियरिंग विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रणबीर सिंह ने आभार प्रकट किया। वेबिनार के आयोजन सचिव डॉ. रणबीर सिंह, डॉ. विकास कुमार ने बताया कि यह आयोजन सिविल इंजीनियरिंग विभाग, स्टूडेंट्स चेप्टर ऑफ इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), जेके सीमेंट लिमिटेड के साझा प्रयासों से किया गया जिसमें विवि के विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों ने हिस्सा लिया।

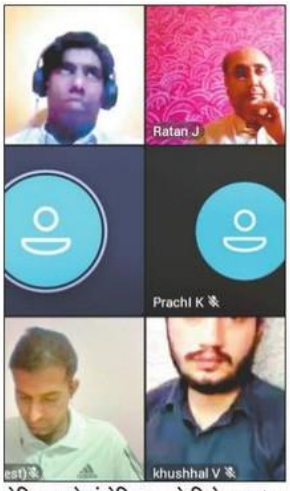

वेबिनार को संबोधित करते विशेषज्ञ। संवाद

हकेवि में ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी पर केन्द्रित वेबिनार आयोजित

नारनोल । हरयिाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ में निर्माण के क्षेत्र में तेजी से प्रसिद्ध हो रही ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी के महत्व पर केन्द्रित वेबिनार लगाया गया। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (एसओईटी) के द्वारा आयोजित इस वेबिनार में विशेषज्ञ बतौर जनरल मैनेजर एंड जोनल हेड (नार्थ) कस्टमर टेक्निकल सर्विसेज, जेके सीमेंट लिमिटेड श्री आर .के .झा उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो .आर .सी .कुहाड़ ने विद्यार्थियों के लिए उनके पाठ्यक्रम पर केन्द्रित इस वेबिनार को बेहद उपयोगी बताया और अपने सन्देश के माध्यम से कहा कि अवश्य ही इस आयोजन से विद्यार्थियों को निर्माण के क्षेत्र में तेजी से अपनी पकड़ बना रही इस नई तकनीक को जानने में मदद मिलेगी। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ .विकास गर्ग ने वेबिनार के आरम्भ में विशेषज्ञ वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस तरह से श्री आर .के .झा निर्माण के क्षेत्र में ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी के साथ कार्य कर रहे हैं। डॉ .विकास गर्ग ने इस आयोजन के लिए एसओईटी के डीन डॉ .अजय बंसल का भी उल्लेख करते हुए उनके सहयोग व मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। श्री आर .के .झा ने अपने संबोधन में बताया कि किस तरह से इस तकनीक के माध्यम से निर्माण के क्षेत्र में बदलाव आया है। उन्होंने बताया कि इस टेक्नोलॉजी के अंतर्गत निर्माण में प्रयोग होने वाली विभिन्न प्रकार की सामग्री के उपयोग व उनके फायदों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि किस तरह से आज निर्माण के क्षेत्र में प्लास्टर, वाल केयर पुट्टी से लेकर ब्रिक्स और टाइल के स्तर पर इस तकनीक की मदद से निर्माण कार्य को सहज और समय कि बचत व कम खर्च में किया जा रहा है। श्री आर .के .झा ने वेबिनार के अंत में प्रतिभागियों की ड्राई मिक्स मोर्टार टेक्नोलॉजी से सम्बंधित विभिन्न प्रश्नों के भी जवाब दिए।

पंजाब केसरी
MON,03 MAY 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 4

'जीवन मूल्यों की स्थापना में शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिका महत्वपूर्ण: प्रो. कुहाड़'

महेंद्रगढ़, 2 मई (परमजीत, मोहन): जीवन में जीवन मूल्यों से बढ़कर कुछ भी नहीं। जिसके जीवन में कोई मूल्य नहीं, उसके जीवन का कोई मोल नहीं। भारतीय संस्कृति में प्राणों से भी ज्यादा अपने वचन की अहमियत मानी गई है। लोगों ने अपने वचन का पालन करने के लिए अपने प्राणों तक की बाजी भी लगा दी। उपरोक्त विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि इन्हीं मूल्यों की स्थापना के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 'मूल्य प्रवाह' के नाम से एक मार्गदर्शिका बनाई गई है, जिसमें उच्च शिक्षण संस्थानों के आचार्यों, अधिकारियों और वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का विकास कैसे हो? उसके बारे में अत्यंत सारगर्भित और व्यावहारिक जानकारी दी गई है। किसी सभ्य समाज की प्रगति और विकास के लिए मानव मूल्य और व्यावसायिक आचार नीति अनिवार्य है।

प्रो. कुहाड़ कहते हैं कि पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा था 'एक विश्वविद्यालय केवल इसका आधा कार्य ही निष्पादित कर पाएगा यदि वह इसके छात्रों की हृदय शक्ति (भावना) को उसी उत्सुकता के साथ विकसित नहीं करना चाहता है जिसके साथ वह उनकी मस्तिष्क शक्ति (विचार) का विकास करता है'। आदि गुरु शंकराचार्य ने लिखा है कि मानवीय मूल्यों के सूक्ष्म पहलुओं को पोषित करने की आवश्यकता होती है, उनको उतनी ही सावधानी से संरक्षित करने की आवश्यकता होती है, जैसे कि कोई मां गर्भ की रक्षा करती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि नैतिक मूल्यों और एक संस्कृति और एक धर्म, इन मूल्यों को बनाए रखना कानूनों और नियमों को बनाए रखने से कहीं बेहतर है।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचारों में शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने या कौशल के प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है इसमें शिक्षकों को मूल्यों की उचित समझ देनी होती है। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अपने आचार्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों में इन्हीं मूल्यों के विकास के लिए विभिन्न माध्यमों से कई कार्यशालाओं का आयोजन प्रतिवर्ष करता है।

हमारी संस्कृति में भोग से अधिक त्याग को महत्व दिया गया है। हमने राजाओं से अधिक योगियों और संन्यासियों को महत्व दिया है। भारतीय जनमानस में राजा हर्षवर्धन और सम्राट अशोक दोनों समान रूप से प्रिय हैं। हमारी संस्कृति में राजा हरिश्चंद्र को सत्य का प्रतीक, श्रीराम भगवान को मर्यादा का प्रतीक, भगवान श्रीकृष्ण को प्रेम और धर्म की स्थापना का प्रतीक, महात्मा बुद्ध को करुणा, त्याग और दया का प्रतीक माना जाता है। इन महापुरुषों ने जीवन मूल्यों की स्थापना के लिए अपना पूरा जीवन ही लगा दिया। इन्हीं मूल्यों की स्थापना हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्च शिक्षण संस्थानों को अपने यहां जीवन मूल्यों को विकसित करने के लिए यह दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

मानवीय मूल्य, मानव जाति की गहन नैतिक आकांक्षाएं मानव संस्कृति का आधार

प्रो. कुहाड़ ने बताया कि उच्च शिक्षण संस्थानों में प्राय: दीक्षांत समारोह के समय कुलाधिपति, उपाधि प्राप्तकर्ताओं से सत्यं वद (सत्य बोलिए), स्वाध्यायान्माप्रमद: (स्वाध्याय में प्रमाद नहीं बरतेंगे) जैसी बहुत-सी नीति की बातों के लिए प्रेरित करते हैं। यह प्रेरणा उन्हें समाज में एक सभ्य नागरिक, सुदृढ़ समाज की स्थापना के लिए दी जाती है। मानवीय मूल्य, मानव जाति की गहन नैतिक आकांक्षाएं हैं, जो मानव संस्कृति का आधार है। जो व्यक्तियों एवं समाज में निहित रहता है, एक अच्छा इंसान बनने के लिए उसे उन्हें आत्मसात करने और सचेत रूप से अभ्यास करने की आवश्यकता है, ताकि वह एक मानव के रूप में अपनी क्षमताओं को पहचान सके। किसी संस्थान के लक्ष्य और दूरदर्शिता की सफलता इसके प्रतिबद्ध आचार्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों के मूल्य आधारित आचार नीति व्यवहार द्वारा संचालित होती है। इस प्रकार किसी संस्थान के हितधारक समूहों के दैनिक संवाद एवं क्रियाकलाप में मुख्य मूल्य और आचार्य नीति व्यवहार को आत्मसात करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

उच्च शिक्षण संस्थानों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मूल्य प्रवाह के नाम से मार्गदर्शिका बनाई

शिक्षकों व शिक्षार्थियों की जीवन मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. कुहाड़

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने बताया कि मूल्यों की स्थापना के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मूल्य प्रवाह के नाम से एक मार्गदर्शिका बनाई गई है।

जिसमें उच्च शिक्षण संस्थानों के आचार्यों, अधिकारियों और वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का विकास कैसे हो? उसके बारे में अत्यंत सारगर्भित और व्यवहारिक जानकारी दी गई है। किसी सभ्य समाज की प्रगति और विकास के लिए मानव मूल्य और व्यवसायिक आचार नीति अनिवार्य है।

प्रो. कुहाड़ कहते है कि पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा था एक विश्वविद्यालय केवल इसका आधा कार्य ही निष्पादित कर पाएगा यदि वह इसके छात्रों की हृदय शक्ति (भावना) को उसी उत्सुकता के साथ विकसित नहीं करना चाहता है जिसके साथ वह उनकी मस्तिष्क शक्ति (विचार) का विकास करता है। आदि गुरु शंकराचार्य ने लिखा है कि मानवीय मूल्यों के सूक्ष्म पहलुओं को पोषित करने की आवश्यकता होती है, उनको उतनी ही सावधानी से संरक्षित करने की आवश्यकता होती है, जैसे कि कोई मां गर्भ की रक्षा करती है।

विश्वविद्यालय कार्यशालाओं का आयोजन प्रतिवर्ष करता है

उन्होंने कहा कि मूल्य और आचार नीति की प्रकृति कपूर की भांति है अगर इन्हें ध्यान से संरक्षित नहीं किया जाए तो वह वाष्पित हो जाते हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि नैतिक मूल्यों और एक संस्कृति और एक धर्म, इन मूल्यों को बनाए रखना कानूनों और नियमों को बनाए रखने से कहीं बेहतर है। उन्होंने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचारों में शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने या कौशल के प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है इसमें शिक्षकों को मूल्यों की उचित समझ देनी होती है। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अपने आचार्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों में इन्हीं मूल्यों के विकास के लिए विभिन्न माध्यमों से कई कार्यशालाओं का आयोजन प्रतिवर्ष करता है।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय। (फाइल फोटो)

कोरोना काल में जन जागरूकता के मोर्चे पर विश्वविद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण - प्रो. आर. सी. कुहाड़

हकेवि में आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान आरटी-पीसीआर टेस्ट और सेनिटाइजर के विषय में विशेषज्ञों ने दी जानकारी

राष्ट्रीय खबर ब्यूरो

चंडीगढ़: भारत सहित आज समूचा विश्व कोरोना महामारी से ग्रस्त है और इसके निदान के लिए प्रयासरत है। मौजूदा समय में इस महामारी के समाधान के लिए दो माध्यम सबसे अधिक कारगर है पहला सावधानी और दूसरा वैक्सीन। ऐसे में विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी बनती है कि वो जहां एक ओर लोगों को इस महामारी से बचाव के लिए आवश्यक तथ्यों व सूचनाओं से अवगत करायें बल्कि वो वैज्ञानिक स्तर पर इस महामारी से बचने के लिए जारी प्रयासों में योगदान दे और ऐसे प्रयासों के प्रति विचार-विमर्श के स्तर पर सकारात्मक रूप से कार्य करें। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के डॉ. के. के. शर्मा व पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एस. के. मेहता ने संबोधित किया।

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस की ओर से आरटी-पीसीआर टेस्टिंग किट व सेनिटाइजर पर केंद्रित इस कार्यशाला का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के संबंध में जानकारी दी

और बताया कि इस अभियान के माध्यम से आजादी के बाद विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों का स्मरण करना और भविष्य की योजना तैयार कर प्रगति के लिए कदम बढ़ाना है। प्रो. सारिका शर्मा ने इस अवसर पर कोविड-19 पर आधारित वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की एक वीडियो सामग्री भी प्रस्तुत की। कार्यशाला के समन्वयक और स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस के डीन डॉ. विनोद कुमार ने मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ताओं डॉ. के.के. शर्मा व प्रो. एस.के. मेहता का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि आजादी बेशकीमती है और यह हमारा कत्तर्व्य है कि हम इसका महत्व समझें और देश की आजादी में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वालों के योगदान को सदैव याद रखें। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए इस आजादी का अमृत महोत्सव के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हम संकल्पबद्ध है और हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन पूरी जिम्मेदारी से करेंगे। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालयों की भूमिका राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण है और हम लगातार अच्छे युवा इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, प्रशासनिक अधिकारी व राजनेताओं का निर्माण कर रहे हैं जोकि इस देश की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी विशेष रूप से इस बात पर जोर देती है कि हम समाज के विकास में, उसकी बेहतरी में किस तरह से योगदान दे सकते हैं। कुलपति ने कहा कि कोरोना महामारी के दौर में भी शिक्षण संस्थान निरंतर जागरूकता व शोध कार्यों के माध्यम से समाज की बेहतरी के लिए अपनी अपनी क्षमता के अनुसार कार्य कर रहे हैं जोकि सराहनीय है। कुलपति ने कहा कि अवश्यक ही आज की कार्यशाला से प्रतिभागियों को आरटी-पीसीआर टेस्टिंग व सेनिटाइजर के विषय में जानकारी प्राप्तर होगी।

कार्यशाला के प्रथम वक्ता डॉ. के.के. शर्मा ने आरटी-पीसीआर टेस्ट की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला। डॉ. के.के. शर्मा ने टेस्ट के सही और गलत आने की प्रमुख वजह सेम्पल लेने की प्रक्रिया को बताया। उन्होंने कहा कि यदि सेम्पल सही ढंग से एकत्र किया जाता है तो परिणाम ठीक आता है अन्यथा उसमें खामी रह जाती है। उन्होंने कहा कि यदि सही ढंग से लिया जाता है तो नतीजे 95 प्रतिशत तक सही रहते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय बाजार में 70 से 80 प्रकार के टेस्टिंग किट उपलब्ध हैं और उनके कार्य करने की अपनी अलग प्रक्रिया है जोकि उनकी प्रमाणिकता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसलिए इन टेस्ट में जांच की प्रक्रिया और सेम्पल प्राप्त करने की प्रक्रिया महत्वपूर्ण रहती है। इसी तरह पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एस.के. मेहता ने अपने संबोधन में सेनिटाइजर विकसित करने पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रो. मेहता ने अपने सहयोगी हरिन्द्र पाल सिंह व राहुल के सहयोग से उपयोगी सेनिटाइजर तैयार करने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उनकी टीम ने किस तरह से लैब से इंडस्ट्री तक सेनिटाइजर को पहुंचाने का कार्य किया। उन्होंने बताया किस तरह से उनकी टीम ने किसी भी सतह पर उपलब्ध वायरस को खत्म करने वाला सेनिटाइजर तैयार किया।

विश्वविद्यालय में आयोजित इस ऑनलाइन कार्याशाला के समन्यवक डॉ. विनोद कुमार ने बताया कि इस आयोजन में आयोजन सचिव डॉ. हरीश कुमार, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता, सह आयोजन सचिव डॉ. राजीव एस. मेनन, कोऑर्डिनेटर डॉ. प्रकाश कानु, डॉ. एजाज अंसारी, व सलाहकार प्रो. दीपक पंत, प्रो. नीलम सांगवान डॉ. बिजेंद्र सिंह, डॉ. गुंजन गोयल, डॉ. सुनील कुमार व डॉ. सुरेंद्र सिंह ने अहम भूमिका अदा की। डॉ. विनोद कुमार ने बताया कि इस कार्यशाला में देश के विभिन्न 23 राज्यों व केंद्रशासित प्रदेश से करीब 400 प्रतिभागियों ऑनलाइन माध्यम से शामिल हुए। कार्यशाला का सफलतम संचालन डॉ. प्रकाश कानू ने किया और धन्यावाद ज्ञापन डॉ. राजीव एस. मेनन ने प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय खबर हमारी नजर Sun, 30 May 2021 https://www.readwhere.com/read/c/60809321